MAHARAJA SURAJMAL BRIJ UNIVERSITY BHARATPUR (RAJASTHAN)

THREE/FOUR YEAR UNDERGRADUTE PROGRAMME IN ARTS

SANSKRIT (III & IV SEMESTER)

ACADEMIC SESSION 2024-25 & onwards

डॉ फरबट सिंह
सहायक कुलसचिव

Session - 2024-25

बी.ए. (संस्कृत) वर्ष 2024–25
तृतीय व चतुर्थ सेमेस्टर

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में एक प्रश्नपत्र होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद / निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

डॉ फरबट सिंह
सहायक कुलसचिव

बी.ए. (संस्कृत) वर्ष 2024–25
तृतीय सेमेस्टर
नियमित परीक्षार्थी
Paper Code- San-10T- 301
वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण

समय : 3 घण्टे　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अंक : 150

पाठ्यक्रम के उदेश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत पढने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर तृतीय सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें वैदिक ज्ञान, गद्य साहित्य एवं व्याकरण का ज्ञान विद्यमान है। वेद मंत्रों के अध्ययन से मन से संबंधित विकारों का निदान होगा जो कि वर्तमान काल में अत्यन्त आवश्यक है। गद्य साहित्य के अंतर्गत युवाओं को सन्मार्ग पर प्रवृत्त होने का मार्ग प्रशस्त होगा, शब्द रूप की मूल उत्पति के अध्ययन से विद्यार्थी के शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी एवं संस्कृत व्याकरण में विद्यमान वैज्ञानिकता से उसका परिचय होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 60 तथा पूर्णांक 150 होंगे और समय 3 घंटे का होगा।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

डॉ फरषट सिंह
सहायक कुलसचिव

पाठ्यक्रम

Unit-I- वैदिक साहित्य — 30 अंक

क. ऋग्वेद के निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन — 20 अंक

अग्नि सूक्त (1/1) वरूण सूक्त (1/25) इन्द्र सूक्त (2/12) प्रजापतिसूक्त (10/121) संज्ञानसूक्त (10/191)

इन सूक्तों के मंत्रों का अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पणी एवं उक्त देवताओं का चरित्र, स्वरूप से सम्बन्धित प्रश्न निर्धारित है।

ख. कठोपनिषद् – प्रथम अध्याय–प्रथम वल्ली — 10 अंक

Unit-II- गद्य साहित्य — 30 अंक

शुकनासोपदेश (कादम्बरी–बाणभट्ट से)

Unit-III- वैदिक साहित्य का इतिहास — 30 अंक

(वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् और वेदांग एवं वेद भाष्यकारों का परिचय)

Unit-IV- व्याकरण (लघुसिद्धान्त कौमुदी) — 30 अंक

क. अजन्त प्रकरण — 15 अंक

निम्नलिखित शब्दों की रूपसिद्धि एवं इनमें प्रयुक्त होने वाले सूत्रों का अर्थज्ञान– राम, सर्व, हरि, गुरू, रमा, नदी, ज्ञान, वारि

ख. हलन्त प्रकरण – — 15 अंक

निम्नलिखित शब्दों की रूपसिद्धि एवं इनमें प्रयुक्त होने वाले सूत्रों का अर्थज्ञान– राजन्, भगवत, विद्वस, युष्मद्, अस्मद् और इदम्।

अंक – विभाजन

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघुत्तरात्मक प्रश्न	'अ' भाग के अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	'ब' भाग के अंक	अंको का योग
1.	ऋग्वेद (वैदिक सक्त) कठोपनिषद्	01 लघू. 01 लघू.	04	2 अ 2 ब	26	18(10+8)+(8) =26
2.	शुकनासोपदेश	02 लघू.	04	3 अ 3 ब	26	16(8+8)+(10) =26
3.	वैदिक साहित्य का इतिहास	02 लघू.	04	4 अ 4 ब	26	16(8+8)+(10) =26
4.	लघुसिद्धान्त कौमुदी क. अजन्त प्रकरण ख. हलन्त प्रकरण	 02 लघू. 02 लघू.	 04 04	 5 अ 5 ब	 11 11	 5+6=11 5+6=11
	कुल	1 (10)	20	04	100	120 अंक

डॉ फरेबट सिंह
सहायक कुलसचिव

निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न

Unit-I- ऋग्वेद

अ. वैदिक सूक्त

भाग अ में 1 लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। 02 अंक

भाग ब

1. 4 मंत्र पूछकर उनमें से किसी 2 की सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। 10 अंक
   देवाताओं के स्वरूप संबंधी प्रश्न में से किसी एक का उत्तर अपेक्षित है। 06 अंक

ब. कठोपनिषद्

भाग अ में दो अंक का एक लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछा जाएगा। 02 अंक

भाग ब

2. दो मंत्र पूछकर किसी एक की व्याख्या अपेक्षित है। 08 अंक

Unit-II- शुकनासोपदेश

भाग अ में 2 लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। 04 अंक

भाग ब

1. 4 गद्य पूछकर उनमें से किसी 2 की सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। 16(8+8) अंक
2. दो विवेचनात्मक प्रश्न पूछकर किसी एक प्रश्न का उत्तर देय होगा। 10 अंक

Unit-III- वैदिक साहित्य का इतिहास

भाग अ में 2 लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। 04 अंक

भाग ब

1. वेदों की शाखाएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाड़.ग परिचय एवं विषय वस्तु के संबंध में से 04 प्रश्न पूछकर उनमें से किन्ही 02 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित है। (8+8) =16 अंक
2. प्रमुख वेद भाष्यकारों के संबंध में दो विवेचनात्मक प्रश्न पूछकर किसी एक प्रश्न का उत्तर देय होगा। 10 अंक

Unit-IV- लघूसिद्धान्त कौमुदी

भाग अ में 4 लघुत्तरात्मक (2 अजन्त प्रकरण से और 2 हलन्त प्रकरण से) प्रश्न पूछे जायेंगे। 08 अंक

भाग ब

अजन्त – 04 सूत्र पूछकर 2 की व्याख्या अपेक्षित है। 05 अंक
4 शब्दों की सिद्धि पूछकर 2 की सिद्धि अपेक्षित है। 06 अंक
हलन्त – 04 सूत्र पूछकर 2 की व्याख्या अपेक्षित है। 05 अंक
4 शब्दों की सिद्धि पूछकर 2 की सिद्धि अपेक्षित है। 06 अंक

डॉ फरबट सिंह
सहायक कुलसचिव

सहायक पुस्तकें–

1. वैदिक सूक्त मुक्तावली– डॉ. सुधीर कुमार गुप्ता, हंसा प्रकाशन जयपुर।
2. ऋक्सूक्त मंजरी– डॉ. सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर।
3. ऋग्वेदसंहिता– एफ. मैक्समूलर–चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली।
4. ऋग्वेदसंहिता– डॉ. शारदा चतुर्वेदी चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली।
5. ऋग्वेदसंहिता– वी.के. शर्मा चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली।
6. कठोपनिषद्– गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. कठोपनिषद्– डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शर्मा– जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
8. कठोपनिषद्– डॉ. रघुवीर वेदालंकार, चौखम्बा औरियाटालिया, दिल्ली।
9. कठोपनिषद् (प्रथम वल्ली)– डॉ. सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर।

गद्य साहित्य :

1. शुकनासोपदेश– डॉ. सुभाष वेदालंकार, अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर।
2. शुकनासोपदेश– डॉ. कुमरपाल सिंह, युवराज प्रकाशन, आगरा।
3. शुकनासोपदेश– डॉ. श्रीकृष्ण ओझा, आदर्श प्रकाशन, जयपुर।
4. शुकनासोपदेश– प्रो0 राजेश्वर मिश्र, निर्मल बुक एजेन्सी, कुरूक्षेत्र।

संस्कृत साहित्य का इतिहास :

1. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा–
2. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास– डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर।
3. संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायण बेनीमाधव, इलाहाबाद।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. श्रीकृष्ण ओझा, अभिषेक प्रकाशन, जयपुर।
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौमुम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. विश्वनाथ शर्मा, आदर्श प्रकाशन, जयपुर।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– प्रो0 उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली।
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली।
9. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. गजानन शास्त्री मुसलगांवकर एवं डॉ. राजेश्वर शास्त्री मुसलगांवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

डॉ फरबेट सिंह
सहायक कुलसचिव

लघुसिद्धान्त कौमुदी :

1. लघुसिद्धान्त कौमुदी–डॉ. अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
2. लघुसिद्धान्त कौमुदी– महेशसिंह कुशवाह–प्रथम व द्वितीय भाग, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी, श्रीश्रीधरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी, विश्वनाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

पाठ्यक्रम का परिणाम – स्नातक प्रोग्राम में बी.ए. संस्कृत विषय के तृतीय सेमेस्टर का पाठ्यक्रम परिणाम की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य, वैदिक साहित्य का इतिहास एवं व्याकरण (अजन्त और हलन्त प्रकरण) है। पाठ्यक्रम को पढ़ने से विद्यार्थी को एक साथ वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण को पढ़ने का अवसर मिलेगा। सूक्तों के अध्ययन से वह प्रकृति के प्रति समादृत होगा तथा व्याकरण के अध्ययन से उसे भाषा का ज्ञान होगा जिससे संस्कृत भाषा और चलन में आयेगी। गद्य साहित्य में शुकनासोपदेश के अध्ययन से संस्कृत साहित्य में विद्यमान उपदेशों का विद्यार्थी को फल प्राप्त होगा एवं कठोपनिषद् के अध्ययन से आत्मतत्त्व के स्वरूप तथा वैदिक साहित्य से अपौरषेय ग्रन्थ वेदों के वर्ण्य–विषय एवं रचनाकाल तथा भाष्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होगा।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त होगा जो कि सभी भाषाओं की जननी है। विद्यार्थी में समाज के प्रति संवेदना जाग्रत होगी। उसके भाषा कौशल में वृद्धि होगी। मन्त्रों का सही उच्चारण जिससे उनका उचित प्रभाव होगा। यह पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी है। यदि विद्यार्थी स्नातक स्तर पर संस्कृत भाषा का अध्ययन करता है तो विद्यालय शिक्षा में शिक्षण के अवसरों में बढ़ोतरी होगी।

डॉ फरबट सिंह
सहायक कुलसचिव

बी.ए. (संस्कृत) वर्ष 2024–25
चतुर्थ सेमेस्टर
नियमित परीक्षार्थी
Paper Code- San-10T- 401
नाटक, छन्द, अलंकार एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास

समय : 3 घण्टे अंक : 150

पाठ्यक्रम के उदेश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत पढ़ने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर तृतीय सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें लौकिक ज्ञान में कवि कुलगुरू कालिदास की विश्वविख्यात रचना अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पढ़ने से विद्यार्थी को सम्पूर्ण जगत् का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। कहा भी गया है – "काव्येषु नाटकं रम्यम्, तत्र रम्या शकुन्तला"। छन्द–अलंकार के अध्ययन से प्राचीन साहित्य को समझने का समुचित अवसर है। संस्कृत साहित्य के इतिहास का अध्ययन प्राचीन समाज और संस्कृति के दर्शन का आधार है।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 60 तथा पूर्णांक 150 होंगे और समय 3 घंटे का होगा।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

डॉ फरेबट सिंह
सहायक कुलसचिव

पाठ्यक्रम

Unit-I- अभिज्ञानशाकुन्तम् कालिदास — 40 अंक

Unit-II- छन्द एवं अलंकार — 40 अंक

छन्द– अभिज्ञानशाकुन्तलम् के आधार पर निम्नलिखित छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण–अनुष्टुप, आर्या, उपजाति, भुजंगप्रयात, वसन्ततिलका, शिखरिणी, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्जा, रथोद्धता, हरिणी, स्रग्धरा, मन्दाकान्ता। — 10 अंक

अलंकार– काव्यदीपिका (अष्टम शिखा) के आधार पर निम्नलिखित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण– अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा, विभावना, विशेषोक्ति, व्यतिरेक, समासोक्ति, दृष्टान्त, दीपक, तुल्ययोगिता, संदेह, भ्रान्तिमान। — 15 अंक

Unit-III- संस्कृत साहित्य का इतिहास — 30 अंक

(क) वीरकाव्य : रामायण तथा महाभारत

(ख) महाकाव्य – कालिदास, अश्वघोष, भारवि, भाघ।

(ग) गीति काव्य – कालिदास, भर्तृहरि, पण्डितराज जगन्नाथ।

(घ) गद्य काव्य – दण्डी, सुबन्धु, बाणभट्ट, अम्बिकादत्त व्यास।

(ड) नाटय साहित्य – भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त।

(च) आधुनिक संस्कृत साहित्य (राजस्थान प्रान्त के विशेष संदर्भ में)

पं. गणेशराम शर्मा, पं. मधुसूदन ओझा, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, पदमशास्त्री, श्री सूर्य नारायण शास्त्री। पं. श्रीरामदेव, पं. नवलकिशोर कांकर, पं. विद्याधर शास्त्री, पं. मोहनलाल पाण्डेय।

Unit-IV- अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत)

अंक – विभाजन

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघुत्तरात्मक प्रश्न	अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	अंक	अंको का योग
1.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लघुत्तरात्मक 3	06	2 अ 2 ब	24	8 16(8+8)
2.	छन्द एवं अलंकार	छन्द लघू. 2 अलंकार लघू. 2	08	3 अ 3 ब	22	11(6+5)+11(6+5)
3.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	लघुत्तरात्मक 3	06	4 अ 4 ब	24	12+12=24
4.	अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत)			04 अ 04 ब 04 स	30	10X3=30
	कुल	10	20	10	100	120 अंक

डॉ फरबट सिंह
सहायक कुलसचिव

प्रश्न–पत्र का निर्माण निम्नानुसार होगा –

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2. प्रत्येक पुस्तक से लघूत्तरात्मक व निबन्धात्मक, व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित हैं।

निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

भाग अ में 2–2 अंक के तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । — 06 अंक

भाग ब

1 से 4 अंकों में से 4 श्लोक पूछकर उनमें से किन्हीं 2 की सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। — 08 अंक

5 से 7 अंकों में से 4 श्लोक पूछकर उनमें से किन्हीं 2 की सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। — 08 अंक

2 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 1 प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है। — 08 अंक

2. छन्द

भाग अ में 2 अंक के एक लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछा जायेंगा । — 04 अंक

भाग ब

4 छन्द पूछकर 2 के लक्षण एवं उदाहरण अपेक्षित है। — 6+5(11) अंक

अलंकार

भाग अ में 2 अंक के एक लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछा जायेंगा । — 04 अंक

भाग ब

4 अंलकार पूछकर उनमें से 2 के लक्षण एवं उदाहरण अपेक्षित है। — 6+5(11) अंक

3. संस्कृत साहित्य का इतिहास

भाग अ में 2–2 अंक के तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । — 06 अंक

भाग ब

4 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 2 प्रश्न के उत्तर अपेक्षित है। — 12+12(24) अंक

4. अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत) — 10x3=30 अंक

15 वाक्यो में किन्हीं 10 वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ।

डॉ फरबट सिंह

सहायक कुलसचिव

सहायक पुस्तकें

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम डॉ. गंगासागर राय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिठान, दिल्ली
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम डॉ. शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम सुबोधनचन्द्र पंत मोतीलाल बनारसी, दिल्ली
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा
5. काव्यदीपिका– परमेश्वरनंद शर्मा, मोतीलाल बनारसी, दिल्ली
6. काव्यदीपिका– डॉ. रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर

संस्कृत साहित्य का इतिहासः–

1. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा चंद्रशेखर पाण्डेय एवं नानूराम व्यास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास– डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, अजमेरा बुक कं. जयपुर।
3. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायणलाल बेलरमाणव, इलाहाबाद
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– श्री सत्यनारायण शास्त्री, आर्य बुक डिपो, दिल्ली।
5 .संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियों– डॉ. जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6 संस्कृत साहित्य का इतिहास– ए.बी. कीथ, अनु. मंगलदेव शास्त्री, दिल्ली।
7 संस्कृत साहित्य का इतिहास– प्रो. राजवंश सहाय 'हीरा' चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली
8 संस्कृत साहित्य का प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहास– डॉ. रामसिंह चौहान रितु पब्लिकेशन, जयपुर
9 संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास– प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यलय प्रकाशन, वाराणसी

पाठ्यक्रम परिणाम – स्नातक प्रोग्राम में बी.ए. संस्कृत विषय के चतुर्थ सेमेस्टर का पाठ्यक्रम परिणाम की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस सेमेस्टर में अभिज्ञान शाकुन्तलम्, छन्द अलंकार, संस्कृत साहित्य का इतिहास एवं अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत) है। जिसका परिणाम यह है कि पाठ्यक्रम में शाकुन्तलम् के अध्ययन से उसे सम्पूर्ण काव्य जगत का ज्ञान प्राप्त होगा छन्द व अलंकार के अध्ययन से प्राचीन गंथों के अध्ययन व उसके अर्थ को समझने में विद्यार्थी को सुविधा होगी छन्द की लयबद्धता से विद्यार्थियों में काव्यात्मक लयवद्धता आयेगी। संस्कृत साहित्य के अंतर्गत रामायण, महाभारत से प्रारम्भ हुई काव्य परम्परा के साथ–साथ अधुनातन काव्य में विद्यमान वास्तविक भारतीय समाज व संस्कृति के ज्ञान की प्राप्ति में सहायता प्राप्त होगी अनुवाद से संस्कृत भाषा में कौशल आयेगा।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी की संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त होगा जो कि सभी भाषाओं की जननी है। विद्यार्थी को इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं समाज में विद्यमान आदर्शो एवं संस्कारों का बोध होगा। जिससे वर्तमान भौतिकीयुगीन समाज में विद्यार्थी सदाचरण युक्त व्यवहार में प्रवृत होते हुए समाज में स्वयं का श्रेष्ठ स्थान निर्धारित करने में सक्षम होंगे।

डॉ फरखट सिंह
सहायक कुलसचिव